दैनिक नया नुकसान

आधुनिक भट्टियों पर बन रही हैं हरे रंग की चूड़ियां

भरतपुर। लुपिन फाउंडेशन ने नई दिल्ली के रूरल टेक्नोलॉजी एक्शन ग्रुप (रूटैग) के सहयोग से परंपरागत भट्टियों के बजाय लेटेस्ट भट्टियों का निर्माण करवाया है। इनमें सुरक्षित वातावरण व कम ईंधन में अधिक चूड़ियां तैयार की जा रही हैं। इससे नदबई पंचायत समिति क्षेत्र के ऊंच गांव में कांच की हरे रंग की चूंड़ियां बनाने वाले उद्यमी अब कम लागत में अधिक उत्पादन कर सकेंगे। साथ ही उनका स्वास्थ्य स्तर भी बेहतर रहेगा।

लुपिन फाउंडेशन के अधिशाषी निदेशक सीताराम गुप्ता ने बताया कि ऊंच गांव में कचेरा जाति के करीब 40 परिवार वर्षों से परंपरागत भट्टियों पर चूड़ियां बनाते रहे हैं। इन भट्टियों में ईंधन की अधिक खपत होने के साथ इनसे निकलने वाला धुएं एवं कांच की जहरीली गैस से कई बीमारियां होने के कारण से उनकी आयु कम हो रही थी। इस पर संस्था ने राज्य के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के सहयोग से नई चूड़ी भट्टियों का निर्माण कराया जिसमें धुआं निकालने के लिये 18 फीट ऊंची चिमनी लगाने के साथ भट्टियों में फायरब्रिक्स लगाई। इसके बाद भी धुआं निकलना पूरी तरह बंद नहीं हुआ, फिर संस्था ने आईआईटी नई दिल्ली के रूटैग से संपर्क किया। रूटैग के वैज्ञानिकों ने समस्यायें देखी और फिर समाधान के लिए आधुनिक भट्टी का निर्माण कराया।

गुप्ता के अनुसार आधुनिक भट्टी में धुआं व कांच की जहरीली गैसें नहीं निकलती। भट्टी में फायरब्रिक्स लगाई गई है कि भट्टी का तापमान 1400 डिग्री सेंटीग्रेड पहुंचने के बाद भी काम करने वाले व्यक्ति के शरीर को प्रभावित नहीं करता है। परंपरागत भट्टियों के मुकाबले करीब 50 प्रतिशत ईंधन की भी बचत होने के साथ काम करने वाला व्यक्ति आसानी से बैठ सकता है। इससे चूड़ी का उत्पादन भी करीब दोगुना हो गया है।

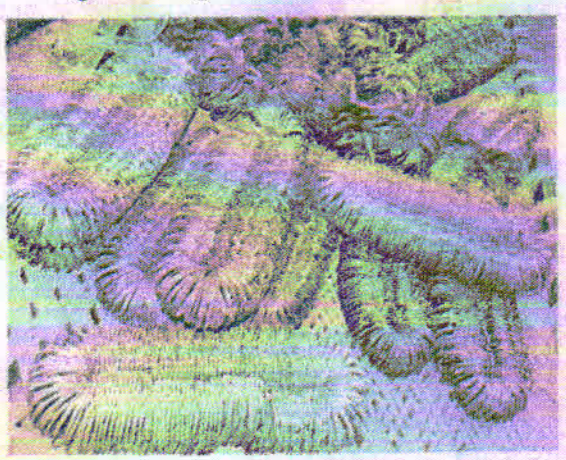

वर्तमान स्थिति: हरे कांच की चूड़ियों का उपयोग ग्रामीण क्षेत्रों में शादी विवाहों में किया जाता है। ऊंच गांव में एक कारीगर प्रतिमाह आय करीब 6000 रुपए है। चूड़ियों का सालाना कारोबार करीब 2 करोड़ का होता है। करीब एक दर्जन लोग रोजगार से जुड़े हुए हैं। वे गांव-गांव जाकर चूड़ियां बेचते हैं वहीं कुछ व्यापारी थोक में भी खरीदते हैं। नदबई तहसील के ऊंच गांव में कुल 5 भट्टियां हैं, इनमें से एक को आधुनिक बनाया है बाकि का काम शीघ्र होगा।

- निजी संवाददाता